स्वप्न संसार

29.3.2001

आज प्रातः होते - होते [illegible] दिखाई देते
बाबा धोती - कुर्ता [illegible]
श्रद्धापूर्वक फूलों से [illegible] अर्पण करता
को - मैं शायद अ[illegible] मेरे सारे शरीर
जगाने पर इस स्व[illegible] र देता है।
[illegible] अनुभव करता हूं।

स्वप्न संसार

27.3.2001

एक स्वप्न आता है जिसमें एक मूर्ति दिखाई देती है। एक व्यक्ति मुझे उसका दर्शन कराता है। अचानक मूर्ति चांदी की तरह चमकने लगती है। उससे दूर एक मकान दिखाई देता है। उसके कई हिस्से हैं, एक हिस्से से दूसरे में मैं जाता रहता हूं - इतना याद आता मैं कहता हूं [illegible] है। धर्मपत्नी उसकी कुछ टूटी-फूटी ईंटों को उसकी एक दीवार में से निकाल करके नयी ईंट दिखाई देती है।

26.3.2001

दूर से एक मन्दिर में एक देव मूर्ति दिखाई देती है एक लम्बा सा कॉरीडोर है। उसके बाद एक कमरे में वह मूर्ति प्रतिष्ठित है। दूर से ही मूर्ति का उत्तम रूप दीखती है। पीछे से उसके दर्शन होते हैं। आज भी उसकी आकृति मेरी आंखों के सामने है।

25.3.2001

मुझे पता चलता है कि भाई राजकुमार हमारे घर आ रहे हैं। उनको ऊंची जगह पर जो कि एक पहाड़ी की तरह है एक recess [illegible] की जिस पर लकड़ी-युक्त सीढ़ियां लगाई जाती हैं। उनके बैठने की व्यवस्था की जाती है। वह अपनी चिर-परिचित अटकती सी चाल में पहाड़ी चढ़ती है। पहाड़ी पर चढ़े धर्मपत्नी और उनमें अमित [illegible] - [illegible] होता है। दोनों की पीठ मुझे दिखाई देती है। मैं पहाड़ी

स्वप्न संसार

29.3.2001

आज प्रातः होते-होते एक स्वप्न आया कि एक पुरोहित सा दिखने वाला धोती-कुर्ता पहिने पीला [illegible] लिये [illegible] अत्यन्त श्रद्धापूर्वक फूलों से मेरा शृङ्गार कर रहा है। वह मेरे सारे शरीर को – मैं शायद अधलेटा हूं – गेंदे के फूलों से पाट देता है। जागने पर इस स्वप्न से बहुत उल्लास का अनुभव करता हूं।

27.3.2001

देव।

एक स्वप्न आता है जिसमें एक मूर्ति दिखाई देती है। एक व्यक्ति मुझे उसका दर्शन कराता है। अचानक मूर्ति चांदी की तरह चमकने लगती है। उससे दूर एक मकान दिखाई देता है। उसके कई हिस्से हैं, एक हिस्से से दूसरे में मैं जाता रहता हूं – इतना बड़ा मकान मैं कहता हूं। मकान पुराना सा है। धर्मपत्नी उस की टूटी-फूटी ईंटों को उसकी एक दीवार में से निकाल कर बैठी हुई दिखाई देती है।

26.3.2001

दूर से एक मन्दिर में एक देवमूर्ति दिखाई देती है एक लम्बा सा corridor है। उसके बाद एक कमरे में वह मूर्ति प्रतिष्ठित है। दूरदर्शन पर भी मूर्ति बहुत स्पष्ट दीखती है। [illegible] उसके दर्शन करने लगते हैं। आज भी उसकी आकृति मेरी आंखों के सामने है।

25.3.2001

मुझे पता चलता है कि भाई राजकुमार हमारे घर आ रहे हैं। गाड़ी ऊंची जगह पर जो कि एक पहाड़ी की तरह है एक Recession of chairs की जिस पर तकिया-गुमा सी गद्दियां लगाई जाती हैं। उसके बैठने की व्यवस्था की जाती है। वह आती है अपनी चिर-परिचित [illegible] सी चाल से, पहाड़ी चढ़ती है। पहाड़ी पर चढ़ धर्मपत्नी आती है। उसमें आत्म[illegible] [illegible] सम्पादन होता है। दोनों की पीठ मुझे दिखाई देती है। मैं खड़ी

के इन्तजार होता हूँ। जब तक राजकुमारी वाले भाग पर पहुँचता हूँ तो पता चलता है कि वह तो चली गई। मैं सोचता था, सवेरे, मुझसे उसकी बातचीत होगी पर ऐसा हुआ नहीं। मन कुछ उदास हो जाता है। राजकुमारी के दर्शन होते हैं; एक ऊँची पहाड़ी जैसी जगह है, वह [illegible] है।
दो दिन बाद ही कई दूतावासों से सूचना आती है कि राजकुमारी आ रही हैं। उस दूतावास में २२ अप्रैल २००१ को एक भोज में हमें निमन्त्रित किया गया है। कितना विचित्र संयोग है। अर्थात् राजकुमारी का स्वप्न में दिखाई देना उसके आगमन की पूर्व सूचना थी।

चार-पाँच दिनों से जो उल्टे-सुल्टे स्वप्न आ रहे हैं उनका सुफल भी दिखाई देता है। वियना की ई-मेल आती है कि संस्कृत सम्मेलन में भाग लेने के लिये एयर इण्डिया ने टिकट देना स्वीकार कर लिया है।

स्वप्न संसार

25.5.1995. मैं रन डाउन

26.5.1995 मैं ने गोद में एक बच्चे को उठा रखा हुआ है।

27.5.1995

प्रातः जागने पहले एक स्वप्न देखता हूँ। कोई होस्टल जैसा है। वहाँ एक कमरा हम मैं और श्रीमती occupy करते हैं। वहाँ कोई व्यक्ति दो दोने जिनमें दो-दो रसगुल्ले हैं हमारे लिये रख देता है। फिर ऐसा लगता है कि हम एक दूसरे कमरे में shift कर गये हैं। वहाँ एक ~~और~~ एक तीसरे दोने हैं जिनमें प्रत्येक में दो-दो रसगुल्ले तथा दो-दो बड़े साइज़ के (king-size) समोसे हैं। एक आदमी उन के विषय में हमें बताता है। हम चकित हैं। मेरे मुँह से निकलता है - क्योंकि पहले कमरे के हमारे हिस्से के रसगुल्ले मिल चुके होते हैं। कि इस कमरे के रसगुल्ले भी हमें मिल रहे हैं। वह व्यक्ति हाँ कहता है। उसी समय नींद खुल जाती है। जागने पर मन में उल्लास का भाव रहता है।

28.5.1995

हम एक पहाड़ पर हैं। शायद शिमला में। मैं श्रीमती से कहता हूँ कि कहीं बाहर चलें। बाहर निकलते हैं। बाहर बारिश हो रही है। तो श्रीमती से कहता हूँ कि कार सावधानी से चलाये। ~~कुछ~~ इतने में खड़ी चढ़ाई दीखती है। डोंगर की तरह की सीधी। श्रीमती उस पर कार चढ़ा देती हैं। कार ऊपर चढ़ने लगती है। मुझको भी लगता है कि कहीं बीच में इसका इंजन बन्द हो गया तो अनर्थ हो जायेगा। पर कार सकुशल चोटी पर पहुँच जाती है। उसी समय नींद खुल जाती है। जागने पर मुझमें उल्लसितता और प्रसन्नता का भाव होता है।

8.5.1995

बहुत देर तक स्वप्न देखता रहता हूँ। लगता है मैं पूना में हूँ। पकौड़े और लड्डू दिखाई देते हैं। यह समाचार मिलता है कि दाण्डेकर नहीं रहा। मैं उसके आंगन में जाता हूँ।

बहुत दुःखी होता हूं।

३०. ५. १९९५

एक सीढ़ी दिखाई देती है। वह दीवार के साथ सीधी लगी है।

टेबल जैसा।

नीचे का हिस्सा उसका कुछ चौड़ा सा है, एक स्टेप से दूसरे में बहुत gap है। मुझे लगता है मैं उसकी को सीढ़ी पर चढ़ नहीं पाऊंगा। फिर भी मैं चढ़ने लगता हूं। बीच में पहुंचने पर डर सा लगने लगता है। जब दो तिहाई के लगभग सीढ़ी चढ़ जाता हूं तो छत के ऊपर खड़े लोग ७०, ७१, ७२, ७३, ७४ इत्यादि गिनती बोलने लगते हैं और मैं अपने को छत पर पाता हूं। छत पर के लोग कहते हैं कि उन्होंने मेरा ध्यान बंटाने के लिये गिनती गिनना शुरू किया था। इससे मेरे मन का भय दूर हो गया और मैं सीढ़ी चढ़ गया।

लगता है ऐसा कोई कार्य सिद्ध होने वाला है जिसके बारे में मैं स्वयं आश्वस्त नहीं हूं। मुझे इस समय अत्यन्त कठिन लगने वाला काम सम्पन्न हो जायगा यही स्वप्न का अर्थ लगता है। इसमें दो तीन लोग स्वतः सहायक होंगे।

---

५. ६. १९९५

आज सुबह नींद खुलने के समय दिखाई देता है कि कोई रसमलाई बनाने वाला आगे खड़ा होता है। कुछ रसमलाइयां थाल में पड़ी होती हैं। इससे पहिले कि कोई और उन्हें ले जाय मैं उन्हें लेना चाहता हूं। उनमें से एक उठा लेता हूं। एक बच्चा भी वहां होता है। वह एक को चखता जाता है फिर दूसरी को। जिसे वह हाथ लगाता है वह गरम है उसे ही मैं लेता हूं। उसका हाथ लगा होने के कारण मुझे कुछ उद्वेग अनुभव सा होता है। मैं रसमलाई खाता हूं। इससे पूर्व मैंने रसगुल्ला खाया है इसका भी आभास मुझे होता है। स्वप्न में सफेद खाने के पदार्थ दिखाई देने के कारण मन में जगने पर प्रसन्नता का भाव रहता है।

लोनावला में जब मैं था - १३. ७. १९९५ और १४. ७. १९९५ को तो दो बहुत ही अद्भुत स्वप्न मुझे दिखाई दिये थे। पहिले दिन स्वर्णाक्षरों में लिखा अभिनन्दन और एक स्वर्ण का पत्ते के आकार का पात्र जो मुझे पुरस्कार स्वरूप कहीं से प्राप्त हुआ था। इनके अतिरिक्त और भी स्वर्णिम अभिनन्दन पत्रादि मुझे दिखाई देते हैं। इतना सोना एक साथ मुझे स्वप्न में देखने को मिला नहीं।

दूसरे दिन एक बहुत ऊंची दीवार मुझे दिखाई देती है। मैं अपने आप ऊपर की ओर जाने लगता हूं। बहुत ऊपर पहुंचने पर एक किसी ईंट के निकल जाने के hollow में हाथ लगा कर जोर लगा कर बिल्कुल top पर पहुंचने में सफल हो जाता हूं।

पहिले [illegible] उड़ते उड़ते आसमान में बहुत ऊंचे तक चला जाता हूं। दूसरी बार मैं उड़ सकता हूं इसका

demonstration में रामलीला ग्राउण्ड जैसे किसी ground में देखा हूं। बहुत जनता वहां एकत्रित है। वहां उतना ऊंचा मैं नहीं उड़ता।

दोनों दिनों के स्वप्न किसी अभूतपूर्व उपलब्धि के सूचक हैं। अभी तक इनका कोई सुपरिणाम सामने नहीं आया। कदाचित् भविष्य में आये।

१८

16 मार्च 1972 की रात को डॉ० साहब को स्वप्न आया कि एक पहाड़ी है जिसमें पहले तो छोटा सा कुंआ होता है लेकिन धीरे धीरे वही कुंआ बढ़ता जाता है और इतना बढ़ जाता है कि उसके नीचे से एक बहुत सुन्दर पुराना शहर निकलता है वहां एक स्थान पर नल ~~फव्वारे~~ जैसे यह जहां से जल निकल रहा है और वह जल बहुत ही मीठा और स्वादिष्ट है। उसी नल ~~फव्वारे~~ के पास एक साधु बैठा हुआ है वह बड़ा प्रसन्न है और कहता है यह सब आपका ही प्रताप है। साधु टेलीफोन करता है और कहता है यह सब आपकी कृपा से हुआ है।

Wednesday the 1st October 1969.

बुधवार १ अक्टूबर सन् १९६९ आश्विन कृष्ण ६ संवत् २०२६
रा. आश्विन ९, शक १८९१ फ. १३७७ नें. १५ गते

उल्लेखनीय स्वप्न

12.12.1996

आज प्रातः जागने से पूर्व एक स्वप्न देखता हूं। पिता जी के साथ मैं एक सड़क पर चला जा रहा हूं। चलते-चलते एकाएक व्यक्ति को मैं सड़क पर कुछ सिक्के बीनते हुए देखता हूं। सड़क पर कीचड़ सा है। ऐसा प्रतीत होता है कि कुछ अखबार वालों ने अपनी बिक्री बढ़ाने के लिये कुछ सिक्के सड़क पर फेंक दिये थे। मेरी नज़र भी उत्सुकतावश सिक्कों को तलाशने लगती है। पर ढेरों तो सिक्के नहीं दिखाई देते। फिर एक-एक करके मिलने लगते हैं। [illegible] के आकार की शक्ल के हैं। एक-एक [illegible] के सिक्के, 10 [illegible] का सिक्का, सोने का चमकता हुआ सिक्का भी मुझे मिलता है, चांदी के भी। मैं कहता हूं ये पुराने होने चाहियें क्यों कि थाई नरेश का चित्र उन पर अंकित है। वह बहुत सुन्दर है। मेरे हाथ में बहुत से सिक्के आ जाते हैं। आगे चलने पर सिक्के मिलने बन्द हो जाते हैं। मैं कहता हूं किसी एक विशेष जगह पर सिक्कों की बौछार की गई होगी। [illegible] कुछ ऊंचाई पर है और चौड़ी सीढ़ी है। एक construction होती हुई दिखाई देती है। आखिर में मुझे स्थान का साइनबोर्ड दीखता है। मुझे डा० जी. एल. [illegible] दिखाई दे जाते हैं। मैं पिता जी से कहता हूं कि चलिये उन्हें मिलना चाहिये। वे कहते हैं हां। इसी के साथ ही मेरी नींद खुल जाती है। ~~[illegible]~~ पर स्वप्न में देखे सोने चांदी आदि के सिक्कों की [illegible] के कारण मन बहुत प्रसन्न है। क्यों कि थाई नरेश का चित्र उन पर है अतः मैं समझता हूं कि थाईलैण्ड से सम्बद्ध कोई शुभ समाचार मिलना चाहिये। अभी तो दिन चढ़ा ही है। देखते हैं दिन में यह स्वप्न कोई फल देता है या नहीं।

[illegible] नहीं हैं [illegible]

[illegible]

13.12.1996

पूर्व दिन में स्वप्न कोई फल नहीं दिखाता। बल्कि कुछ उल्टा ही अनुभव होता है। श्रीमती की [illegible] कराया था और जिसके बारे में हम आश्वस्त थे कि वह उस के अनुसार [illegible] पर [illegible] करवानी थी, उस के बारे में पता चलता है, कि [illegible] नहीं। [illegible] में श्रीमती का नाम ही नहीं, [illegible] से मन में [illegible] जाती है। मन बहुत परेशान हो जाता है।

17. ५. १९९९

कल शाम को भाई वेदप्रकाश जी अपने पुत्र नरेन्द्र तथा बहू नीता के साथ हमें मिलने रघुनगर में आये। उन्होंने पिताजी के जीवन का एक प्रसंग सुनाया था जो इस प्रकार है —

"एक दिन पिता जी ने घर का दरवाज़ा खोला। उन्होंने देखा कमरे में एक सांप फन उठाये हुए बैठा हुआ है। उन्होंने कहा—महाराज जहां से आये हैं वहीं चले जाइये। यह कहकर उन्होंने दरवाज़ा बन्द कर दिया और कहीं चले गये। कुछ समय बाद जब वे आये तो सांप वहां नहीं था। उन्होंने चादर बिछाई और बड़े आराम से सो गये।"

श्री वेदप्रकाश जी का कहना था कि कोई और होता तो एकदम शोर मचा देता। डर कर मोहल्ले वालों को इकट्ठा कर लेता। पर पिता जी निर्विकार बने रहे। इतना ही कहा - महाराज जहां से आये हैं वहीं चले जाइये। ऐसे थे हमारे पूज्य पिताजी।

१५।४।१९७९

स्वप्न लोक

21.7.1999

आज प्रातः पौने पांच बजे के लगभग मुझे एक रंग बिरंगा सा स्वप्न आया। स्वप्न बहुत छोटा था पर था बहुत महत्त्वपूर्ण। एक हैलीकोप्टर में बैठा हुआ मैं उसके आगे के windscreen के नीचे के wide aperture में से एक बड़ी भारी बिल्डिंग को देखता हूं। बिल्डिंग पर - उसके huge framework पर तरह-तरह की भव्य sculptures बनी हैं। एक बृहदाकार धरती की, एक full-size की human figure. सारी की सारी frame-size तक figures से ~~भी~~ भरी है। ~~H~~ हैलीकोप्टर तैर रहा है - नीचे से ऊपर की ओर उड़ रहा है। एक अपूर्व सौन्दर्य के दर्शन मुझे होते हैं। मेरी नींद खुल जाती है। नींद खुल जाने पर मेरा मन बहुत प्रफुल्लित है। लगता है शुभ स्वप्न है किसी शुभ घटना का संकेत देता है। शायद दिन में कोई अच्छा समाचार सुनने को मिले। पर ऐसा कुछ नहीं होता है। दिन बहुत सामान्य सा बीतता है। पहले तो ऐसा नहीं हुआ करता था। जब भी कोई अच्छा स्वप्न दिखाई देता था कुछ न कुछ अच्छा अवश्य घटता था। पर अब कुछ समय से ऐसा नहीं हो रहा। कुछ दिन पूर्व भी मुझे दो तीन अच्छे स्वप्न आये थे। एक में मैं पहाड़ पर चढ़ रहा हूं। दूसरे में मैं भागता चला जाता हूं मीलों तक एक पहाड़ी मार्ग पर। एक बात जो इन सभी स्वप्नों में एक समान है वह यह है कि मैं अकेला ही होता हूं, मेरे साथ और कोई नहीं होता. धर्मपत्नी नहीं, बच्चे नहीं, संगी-साथी नहीं।

क्या यह आध्यात्मिक उत्कर्ष का संकेत तो नहीं?

४.१२.१९६८

रात को दो विचित्र स्वप्न देखे। एक में तो थाईलैण्ड भारत में दिखाई दिया पर उसकी शकल थाई महाराजा से मिलती थी। वह बहुत अजीब प्रकार से सिर हिलाता था। उसके पीछे एक नवयुवक था। स्वप्न में वह पाकिस्तान का प्रिंस है यह बोध होता है। वह शब्द कुछ कहता जा रहा है। थाईलैण्ड का राजा उस पर सिर हिलाता जा रहा है। अपने पाकिस्तान का प्रिंस भारत के बारे में अपशब्द कहता है, गाली निकालता है। मुझे कुछ अजीब लगता है। इस पर स्वप्न टूट जाता है। राजा दिखाई दिया है इसलिये मन कुछ हल्का है। स्वप्न में राजा का दर्शन अच्छा [illegible] का दर्शन शुभ माना जाता है।

इसके बाद का स्वप्न कुछ धुंधला सा है। पर इतना याद है कि मैं कहता हूँ कि गुरुद्वारा कहाँ है, मुझे वह नहीं दीखता है। एक सफेद सा पर्दा हट जाता है तो मैं देखता हूँ कि बाईं, मेरे सामने ही गुरुद्वारा था और मैं उसे ढूँढ रहा था। मैं जेब में से कुछ सिक्के निकालता हूँ चढ़ाने के लिये। एक लड़की जो शायद कहीं की गुजरातिन सी है मुझे माथा टेकने से रोकती है, मैं तो चला हूँ शायद मुझे अपनी बारी पर आना था। इसके आगे याद नहीं पड़ता। यद्यपि माथा नहीं टेक सका पर गुरुद्वारा ठीक लग गया ही। मन्दिर दर्शन तो हो ही गया। दोनों ही स्वप्न शायद

January 1967

MONDAY

23

29.4.70, —

डा. साहब का स्वप्न, पूना में एक व्यक्ति इन्हें पूरा खाली मकान दे देता है कि इसमें रहिए, भाई जी इनके साथ है, ये कभी कभी वहां चले जाते हैं, उसी शाम को बनारस से पत्र आता है कि आप जुलाई के अन्त तक आ सकते हैं। सहारों मिल जाने की भावना।

TUESDAY

24

WEDNESDAY

25

THURSDAY

26

FRIDAY

20

सपनों में कोई नाटक देख रहा हूं।

दूसरा दृश्य

इसी नाटक का दूसरा दृश्य हो चुका है — एक स्त्री एक सुन्दर नील गलाइशिन में से निकलती है। बाद क आडेसीय सुन्दर रंगस्थल का [illegible]

SATURDAY

21

काली सीढ़ियाँ ऊपर को जा रही हैं। वह ऊपर चढ़ने लगती है। फूलों से वह कोह दे सजी है। सारा दृश्य बहुत आकर्षक है।

नाटक में कोई विशेष [illegible] घटनाएँ नहीं घटती।

SUNDAY

22

January **1967**

WEDNESDAY
18

31 मई को Usha, Sharad and Indu ने चेचक के टीके लगवाये ~~थे~~ । थे ।

स्वप्न है मन्दिर के गलियारे जैसा। उसमें एक विकट आकृति का खूँखार मनुष्य दिखाई देता है। वह एक ~~बाबा~~ साधु बाबा को झपटता है। मैं चित

THURSDAY
19

नीचे गिरा था उस समय वहीं उपस्थित हूँ। मैं यह देखकर चिल्लाता हूँ बाबा को बचाओ, बाबा को वह ले गया। इतने में तीन व्यक्ति कहीं से निकल आते हैं। उन्हें देख देखकर वह मनुष्य डर से थर-थर काँपने लगता है। उन तीन व्यक्तियों में एक स्त्री है जो खड्ग उसके शरीर में भोंक कर कहती है। मुझे [illegible]

January **1967**

WEDNESDAY
18

31 मई को Usha, Sharad and Indu ने चेचक के टीके लगवाये ~~थे~~। थे।

स्वप्न है मन्दिर के गलियारे में था।
उसमें एक विकट आकृति का
खूंखार मनुष्य दिखाई देता
है। वह एक ~~बालक~~ सा युवक
को पकड़ता है। मैं कितने
THURSDAY **19** नीचे खड़ा था उस समय
वहीं उपस्थित हूं। मैं यह
देख चिल्लाता हूं बालक को
बचाओ, बालक को वह
ले जायगा। इतने में तीन
व्यक्ति कहीं से निकल
आते हैं। उन्हें देख देखकर
वह मनुष्य डर से उस बालक
छोड़ भागता है। उन
तीन व्यक्तियों में एक
स्त्री है जो सब कुछ उस के
शरीर में से पकड़ कर देखती
है। मुझे [illegible]

स्वागत को | प्रवेश करने को (कुछ) उसको लगाना चाहते हैं। कितने ही लोग
कहते हैं कि उसको चलकर ही रख पाते हैं। उसको कुछ कुछ नई ये
एक इश्तहार [illegible] है। उसी से लाभ फैलाने
इस | लिये वे लोग प्रयत्न में लग जाते हैं। इसी पर [illegible] हो
जाता है।

रात में सपने देखे हैं। पर दो चीजें उभर आई हैं। एक तो (विवाह के आयोजन) [illegible] पहुँच जाते हैं और न खुलना और दूसरा यात्रियों के रूप में एक ग्राउंड में प्रवेश करना। ग्राउंड सुन्दर है पर यात्री! [illegible] ...

3. 1. 1979

1. कुमायूँ के [illegible] में [illegible] श्री हरिनारायण [illegible] मुझसे मिलने आते हैं। वे साथ में मिठाई लाते हैं। मिठाई में से देखते ही देखते चींटों की डार की डार निकलने लगती है और [illegible] के पाँवों में [illegible] की तरह — कुछ [illegible] होते भी हैं — घुसने लगती हैं।

नींद खुल जाती है। मन कुछ [illegible] सा हो जाता है। चींटों की डार का [illegible] — उनका [illegible] के पाँवों के छिद्रों में प्रवेश का दृश्य घिनौना था।

2. ऐसा लगता है कि कोई मुझे कुछ — शायद तीन — किताबें दी हैं। मैं उन्हें कहीं छोड़ देता हूँ। मुझे उनकी याद बार बार आती है। एक पुस्तक विक्रेता की दुकान पर एजेंसी भी रखी है। मैं उससे [illegible] पूछता हूँ कि मेरी पुस्तकें तो नहीं छूट गईं। उसका उत्तर होता है हाँ और वह मुझे दो [illegible] पुस्तकें दे देता है। मुझे लगता है शायद मेरी पुस्तकें तीन थीं। [illegible] दो Cupboard खोलकर दिखा देता है। उनमें मेरी किताबें रखी हैं। उनमें से Encyclopaedia [illegible] की अनेक जिल्दें हैं। मैं सोचता हूँ [illegible] कैसे ले जाया जायेगा। बहुत [illegible] Special permission लेनी पड़ेगी। वहाँ से चल देता हूँ। एक खुले से मैदान में [illegible] दिखाई देती है। उसमें आदमियों और [illegible] हैं। मुझे उनके साथ जाना है। मैंने पायजामा पहना हुआ है मैं धोती पहनकर उनके साथ जाना चाहता हूँ। मैं [illegible] खड़ा हुआ हूँ, [illegible] जाना चाहता हूँ ताकि [illegible] कर सकूँ। मैं [illegible] लोगों से कहता हूँ कि [illegible] मुझे [illegible] लेंगे। मैं उन्हें बताता हूँ कि मैं एक बहुत बड़ी बिल्डिंग के [illegible] पर ठहरा हुआ हूँ। वे कहते हैं कि मुझे वहाँ से ले लेंगे। क्योंकि सब लोग तैयार हैं, समय बहुत कम है, फलतः मैं साइकल से ही चल पड़ता हूँ। उसके पीछे एक [illegible] है। मैं [illegible] साइकल खींचता हूँ। [illegible] जाता हूँ और साइकल से उतर जाता हूँ। वृक्षों की कतारों के बीच [illegible] रास्ता मुझे [illegible] रहा है। मुझे काफी दूर तक [illegible] करना है। उसके छोर पर है वह [illegible] विशाल इमारत जिसके [illegible] से ऊपर [illegible] मैं [illegible] हूँ।

[illegible] की [illegible] बदहवास [illegible] हूँ। कुछ [illegible]
[illegible] को [illegible] करता हूँ।

[illegible] को space की / [illegible] ज़रूरी थी / प्रश्न और भी बड़ा मेरे [illegible] पर खड़ा होता है।

७.१.५८

1. ऐसा दिखाई देता है कि मैं बहुत दूर चलता चला जाता हूँ। बहुत दूर निकल जाने पर मुझे ध्यान आता है कि मैं बहुत दूर पहुँच गया हूँ। वापिस जाने का रास्ता मुझे भूल जाता। मैं जिस रास्ते से आता हूँ उसी से वापिस चला जाता हूँ। एक दो बार दो रास्ते से दीखते हैं और मुझे [illegible] रास्ते से वापिस चलना चाहिये [illegible] संदेह होने लगता है पर [illegible] वहाँ एक ही रास्ता होने से [illegible] नहीं होती। थोड़ी दूर तक और जाने पर मुझे लगता है कि मुझे पूछना ही पड़ेगा कि [illegible] होटल तक (स्वप्न में [illegible] उसके बाद लखनऊ होटल का नाम मुझे स्मरण रहता है, बहुत पुराना ऐसा कोई है नाम है — चारबाग?) पहुँचने का रास्ता क्या है। मुझे एक आदमी दिखाई देता है। मैं उससे पूछता हूँ। वह मुझे पहिचान लेता है और साथ [illegible] है। [illegible] बहुत नरमी से है। ~~[illegible]~~ मैं कहता हूँ। वह मुझे [illegible] के होटल में कहता है। [illegible] लगता है। मुझे होटल दीख जाता है। उसमें मेरा सामान पड़ा है पर स्वप्न में [illegible] बहुत [illegible] होता है।

ऐसा लगता है इस स्वप्न का अर्थ है कि कहीं से अप्रत्याशित सहायता मिलेगी।

2. एक स्वप्न में डा० [illegible] चौधरी दिखाई देते हैं। वे मुझसे मिलते हैं। [illegible] हैं। वह [illegible] देने के लिये कि मेरी Headship के [illegible] तय हो गया है। वे कहते हैं कि [illegible] ने भी मेरे पक्ष में [illegible]। [illegible] इसके लिये वो [illegible], मैं उनसे पूछता हूँ कि कहाँ है। [illegible] मेरी Headship के लिये [illegible] हो गया है, वे कहते हैं। लगता है [illegible] में कहना था कि मेरी Headship तय हो चुकी है।

देखें क्या होता है। [illegible] स्थगित है। क्या वास्तव में मेरे पक्ष में [illegible] हो गया है। क्या इस स्वप्न में कुछ सत्यता हो सकती है। इतना तो है ही कि [illegible] दोनों [illegible] के [illegible] बहुत [illegible] है।

९.१.५८ ई.

1. एक [illegible] दिखाई देता है। उसके [illegible] एक पुराना महल सा है। मैं [illegible] हूँ। [illegible] उसके [illegible] उठ कर उसके [illegible] इतना [illegible] कि उसके ऊपर तक [illegible] पहुँच जाता है। उसके बारे में मैं [illegible] हूँ। पता चलता है कि [illegible] है। [illegible] कह रहा था।

2. [illegible] का [illegible] दिखाई देता है। मैं [illegible] के [illegible] शरणार्थी हैं। उनको [illegible] [illegible] शरणार्थी उनमें [illegible] हैं। [illegible] के [illegible] हैं। [illegible]

स्वप्नसंसार

6.2.1978.

आज रात को तीन स्वप्न आये।

पहिला

मैं चण्डीगढ़ में हूं। यहां तीनों गवर्नरों के घर दिखाई देते हैं। एक के घर के बाहर मजमा होता सा है। मैं भीतर जा रहा हूं। एक दूर तक फैला हुआ सुन्दर हरा भरा लान दिखाई देता है। मैं पता करता हूं कि कौन गवर्नर इस समय हरियाणा का है। पता चलता है कोई अग्रवाल है, नाम पता चलता है बी. डी. अग्रवाल। मैं कहता हूं कि क्या आयुर्वेद व रघुवंश वाला तो नहीं। उत्तर मिलता है हां वही। मैं भीतर पहुंच जाता हूं। ~~अग्रवाल~~ मैं कहता हूं + वे तो मेरे मित्र हैं। मैं अग्रवाल जी से मिलता हूं। वे मुझे बड़ी अच्छी तरह मिलते हैं। इसके बाद मुझे तीन मूर्तियां दिखती हैं। शिरस्त्राण जैसा कोई head dress पहिने हुए। एक के नीचे एक। जैसे एक अलमारी का हिस्सा ऊपर होता जाय एक मूर्ति देखने के बाद। फिर दूसरी मूर्ति दिखाई दे जाय। फिर तीसरी। इसी के बाद नींद खुल जाती है। मन बहुत प्रसन्न है। शरीर में एक सिहरन सी होती है। स्वप्न बहुत अच्छा था। दूर तक फैली हरी हरी लान का दृश्य तथा मूर्तियों का दृश्य दिमाग में समाया रहता है। सब कुछ बहुत सरस है। धीरे से ऊपर उठकर दिखना मूर्तियों का।

दूसरा

रांची जैसा कोई स्थान है। एक व्यक्ति के पास मैं हूं। उसका पुत्र भी पास में है। उसका कोई सम्बन्धी Airplane से आता है। वह उसे गले मिलता है। फिर वह उसके पुत्र की ओर इशारा कर कहता है कि पहिले वह उससे मिले। मैं मन ही मन कहता हूं [illegible] भी है। वह उसके सम्बन्धी हैं। उससे मिलने के बाद मेरी उसकी बातचीत होती है। मैंने पूछा आपको flying में कितना टाइम लगा। वह कहता है 4½ घण्टे। मैंने कहा मुझे तो बहुत समय लगेगा। मुझे भी कुछ दिनों में जाना है न्यूयार्क का सफर। इसके बाद नींद खुल जाती है। सुदूर यात्रा की बात अच्छी लगती है।

तीसरा

एक पहाड़ी रास्ता सा है। धर्मपत्नी कहती हैं वह चढ़ाई है। मैं कहता हूं। थोड़ी देर और चलो तो मैं ऐक्सीलरेटर को दबाऊंगा। फिर एक बस दिखाई देती है। बस वाला जोर से ब्रेक लगाता है कि बस एक झटके के रूप से बिल्कुल रुक सी जाती है। कुछ अजीब सा लगता है। फिर वह बस को बैक करता है।

इसके पश्चात् एक तांगे में जाता अपने को पाता हूं। तांगा सरपट दौड़ा जा रहा है। बरसात होके चुकी है। जमीन गीली है। तांगेवाला जल्दी पहुंचने के अर्थ पक्की सड़क छोड़ कर कच्ची जमीन पर तांगे को चला देता है। जमीन गीली होने पर भी तांगा सरपट दौड़ रहा है।

तीनों स्वप्न बहुत अच्छे हैं। लगता है कोई सुदूर यात्रा का योग बनने वाला है। सोचता हूं दिन में इस प्रकार का शायद कोई पत्र आ जाय। पर ऐसा कुछ नहीं होता। दिन में कुछ विशेष शुभ घटित भी नहीं होता। सब कुछ सामान्य ही रहता है।

पिछले तीन चार दिन से स्वप्न आ रहे हैं। पर कुछ विशेष याद नहीं रहा है। यद्यपि चित्र बनते हैं। किन्तु कहीं [illegible]। कभी [illegible] सर्वानन्द जी, कभी डा० वासुदेवशरण अग्रवाल आदि दिखते हैं।

३. २. १९६८

कोई विशेष स्वप्न नहीं।

४. २. १९६८

स्वप्न दिखाई देता है। बाबू सम्पूर्णानन्द जी के यहाँ आया हुआ हूँ। सम्भवतः [illegible] में हैं। मेरे से पहिले श्री प्रताप चन्द्र चन्द्र वहाँ उनसे बात कर रहे थे। वे चले जाते हैं। सम्पूर्णानन्द जी बिल्कुल थके हुए हैं। मुझे लगता है देखो [illegible] है। [illegible] नहीं हैं तो कोई conversation करना नहीं चलता। उन्होंने शायद [illegible] होता है। [illegible] कहते हैं - कोई सम्पूर्णानन्द जी आपका क्या हाल है। उनके मुख से [illegible] सुन मुझे बड़ा अजीब लगता है। मैं सोचता हूँ बाद [illegible] मेरा नाम पता है। फिर वे मुझे कहते हैं मैंने चन्द्र जी से बात कर ली है वे कहते हैं कि वे ठीक कर देंगे। मैं सोचता हूँ [illegible]

९. ६. १९६८

रात्रि को बड़े विचित्र स्वप्न दिखाई देते हैं। मैं standing posture में आकाश में जैसे जा रहा हूँ - बिना हिले डुले। धीरे धीरे नीचे आ रहा हूँ। नीचे गहरा नीला समुद्र है। मेरी आँखें बन्द हैं। [illegible] मेरी [illegible] हैं। पानी के कुछ ऊपर space में मैं चल रहा हूँ। शायद कहीं कुछ जा रहा हूँ। समुद्र के जल के [illegible] पानी के ऊपर safely कुछ ऊँचाई पर glide करता रहता हूँ। नींद खुलने पर ~~एक~~ रोमांच हो जाता है। लगता है स्वप्न बड़ा ही अद्भुत था। इससे पहिले भी एक इसी प्रकार का स्वप्न आया था। तब मैं [illegible] posture में space में चलते हुए अपने को अनुभव करता हूँ। एक point पर [illegible] करना होता है। मैं यह feel करता हूँ कि मैं [illegible] को ही [illegible] कर सकता हूँ [illegible] नहीं। गई रात फिर space में [illegible] करने का स्वप्न आया। शायद फल कुछ अच्छा ही होगा।

फिर एक स्वप्न आता है। पिताजी और मैं वैष्णो देवी की यात्रा पर हैं। पिताजी को सूचना मिलती है कि उनके लिये कहीं से टेलीफोन है। वे उसे सुनने को चल देते हैं। मैं अकेला [illegible] के बाद quick steps से चल पड़ता हूँ। [illegible] जा रहा हूँ। मेरी दृष्टि पहाड़ पर पड़ती है। मैं अभी [illegible] ही हूँ। अर्द्ध कुंवारी मुझे पहाड़ की side से [illegible] में ऊँचाई पर दीख रही है। चोटी भी दिखाई देती है। मैं कहता हूँ यह सब मुझे चढ़ना है। [illegible] की दूसरी ओर जाना है।

वैष्णो देवी की यात्रा पर जाने का भी मेरा दूसरा स्वप्न है। एक बार पहिले भी इसी प्रकार का एक स्वप्न आया था। तब [illegible] मैं [illegible] पत्नी वैष्णो देवी को [illegible] चलते हैं। बाद में [illegible] रास्ता [illegible] नहीं है। [illegible] सीढ़ियाँ [illegible] हैं। कुछ [illegible] भी है। [illegible]

कुछ भी दिखाई भी नहीं दे रहा है। पांव यहां वहां [illegible] हो पड़ते जा रहे हैं पर सही रास्ता, खाई में नहीं; झाड़ियों में नहीं; इतने में क्या देखता हूं कि यह रास्ता छूट गया है और मैं भी पक्की सड़क पर हूं। रुक जाना पड़ता है। सीधी खड़ी चढ़ाई है। मैं पूछता हूं यह कौनसी जगह है। मुझे बताया जाता है कि यह [illegible] है। [illegible] मुझे अभी और बहुत चढ़ाई चढ़नी है। पक्की सड़क और सीधी चढ़ाई मुझे बहुत स्पष्ट दिखाई देती है।

एक और स्वप्न कुछ अस्पष्ट सा स्मृति में रह जाता है। एक पहाड़ी सड़क है ऊपर को जाती हुई। उसके ~~छोर~~ पर हम हैं। धर्मपत्नी कहती है कि उसने एक मकान देखना है जिसमें [illegible] है। वह उस मकान में चली जाती है। बाहर सड़क के दोनों ओर [illegible] कुछ फूल खिले हुए हैं। वह कहती है ये वही फूल हैं Tulip जैसे हैं white with yellow [illegible] marble. फिर हम भी चले जाते हैं। मैं दूसरी सड़क पर जाता हूं। show case [illegible] में एक [illegible] चला जाता हूं। [illegible] अन्धकार सा बना है। [illegible] दो तीन लोग दिखाई देते हैं। एक [illegible] young [illegible] सी है। उनके सामने पड़ने पर trespass [illegible] मैं उनसे पूछता हूं कोई मन पड़ता सा नाम लेकर कि प्रोफेसर [illegible] यहां काम करते हैं, वे कहते हैं यहां कम करते हैं, [illegible] यहीं कोई प्रोफेसर या साहब कि बताया गया। एक कोई प्रोफेसर का नाम लेकर कहता है [illegible] पानी पीजिये। हमें कुछ भी जान पहचान तो थी नहीं। [illegible] दूसरी ओर चले आते हैं। फिर हम देखते हैं कि पहाड़ की उस सड़क के दोनों [illegible] नहीं चलाई। लगता है वह स्थान [illegible] कोई है। इसके बाद नींद टूट जाती है।

स्वप्न तीनों ही अच्छे हैं। इसमें कोई सन्देह नहीं। जागने पर मन प्रसन्न है। अच्छे दिनों की तरह अवसाद नहीं है। लगता है हमारे भी दिन कुछ अच्छे आने वाले हैं - अच्छे दिन जिनकी आज प्रतीक्षा के सहारे ही हम अपना वर्तमान समय काट रहे हैं।

दिन का समय बीतता है। कोई विशेष अच्छी बुरी घटना नहीं घटती। [illegible] Natural [illegible] जाता हूं, काम करता हूं, समय कट जाता है। अपराह्न में भी [illegible] सूट का कपड़ा लाता हूं।

१०.६.१९६८

रात्रि को दो स्वप्न आते हैं। एक तो बहुत ही मधुर है। बहुत कुछ उसका अब याद नहीं रहता। जितना याद रहता है वह भी बहुत रोमांचक है। एक मन्दिर सा है। मैं वहां हूं। [illegible] मेरी भी [illegible] निकली हुई है। [illegible] पूरी बाहर नहीं निकली हुई। फिर पूरी बाहर निकल ली है। [illegible] मुझे [illegible] प्रसाद मिलता है कुछ [illegible]

३.२.१९६८

कोई विशेष स्वप्न नहीं।

४.२.१९६८

स्वप्न दिखाई देता है। बाबू सम्पूर्णानन्द जी के यहाँ शायद गया हूँ। सम्भवतः नववर्ष का दिन है। मेरे से पहिले श्री प्रताप चन्द्र चन्दर वहाँ उनके पास आ रहे थे। वे चले जाते हैं। सम्पूर्णानन्द जी बिल्कुल अकेले हैं। मुझे लगता है देखो अजीब बात है। इन कामों में नहीं हैं तो कोई नमस्कार करने नहीं आता। उन्हें शायद खाना खाना होता है। जुकाम के कारण हैं - कहते हैं - भाई ये सम्भवतः जी [illegible] का हाल है। उनके कुछ देर रहना [illegible] मुझे बड़ा अजीब लगता है। मैं सोचता हूँ बाद में [illegible] चला हूँ। फिर वे मुझे कहते हैं मैंने चन्दर जी से बात कर ली है। वे कहते हैं कि वे [illegible] ठीक कर देंगे। मैं समझता हूँ कि शायद [illegible]

८.६.१९६८

रात्रि को बड़े विचित्र स्वप्न दिखाई देते हैं। मैं standing posture में आकाश से जैसे आ रहा हूँ - बिना हिले डुले। धीरे धीरे नीचे आ रहा हूँ। नीचे गहरा नीला समुद्र है। मेरी आँखें बन्द हैं। आकाश खाली केवल मेरी निगाह पर है। पानी के कुछ ऊपर space में मैं चल रहा हूँ। शायद कहीं उड़ आ रहा हूँ। है समुद्र के पास के आयाम पर अगाधता का सामने [illegible] है। पानी के ऊपर safely कुछ ऊँचाई पर glide करता रहता हूँ। नींद खुलने पर ~~एक~~ रोमांच हो जाता है। लगता है स्वप्न बड़ा ही उत्तम था। इससे पहिले भी एक इसी प्रकार का स्वप्न आया था। तब मैं चलती ~~[illegible]~~ posture में space में चलते हुए अपने को अनुभव करता हूँ। एक point पर fix करना होता है। मैं यह feel करता हूँ कि मैं दायें को ही fix कर सकता हूँ बायें को नहीं। गई रात फिर space में walk करने का स्वप्न आया। शायद पहले कुछ अच्छा ही होगा।

फिर एक स्वप्न आता है। पिताजी और मैं वैष्णोदेवी की यात्रा पर हैं। पिताजी को सूचना मिलती है कि उनके लिये कहीं से टेलीफोन है। वे उसे सुनने को चल देते हैं। मैं अकेला रह जाता हूँ। इसके बाद quick step से चल पड़ता हूँ। कुछ देर तक ही आ सकता हूँ। मेरी दृष्टि पहाड़ पर पड़ती है। मैं अभी bottom पर ही हूँ। याद कुमारी मुझे पहाड़ की side से middle में ऊँचाई पर दीख रही है। चोटी भी दिखाई देती है। मैं कहता हूँ यह सब मुझे चढ़ना है। चोटी पार कर दूसरी ओर जाना है।

वैष्णोदेवी की यात्रा पर चले होने का भी मेरा दूसरा स्वप्न है। एक बार पहिले भी इसी प्रकार का एक स्वप्न आया था। तब यह दिखाई दिया था कि मैं अपनी धर्मपत्नी वैष्णोदेवी को लिये चलते हैं। बाद में मैं ही रह जाता हूँ कि मैं अकेला ही हूँ। कोई रास्ता नहीं है। उनका - रास्ता बड़ा सीधा सा है। कुछ धुंध सी चलता जाती भी है। ठीक से

कुछ ऐसे ही कोई भी नहीं देखा है। पांच [illegible] [illegible] अगले प्रात
हो पड़ते जा रहे हैं पर सही स्थान पर, कहीं भी नहीं; जहां देखें नहीं;
इतने में क्या देखता हूं कि ये पत्थर टूटे गिरते हैं और उनमें भी
पक्की सड़क पर हूं। एक गांव सा आता है। सीधी खड़ी चढ़ाई है।
मैं पूछता हूं यह कौन सी जगह है। मुझे बताया जाता है
कि यह मुंडका है। [illegible] की ओर आधा रास्ते पर।
मुझे अभी और बहुत चढ़ाई चढ़नी है। पक्की सड़क और
सीधी चढ़ाई मुझे बहुत स्पष्ट दिखाई देती है।

एक और स्वप्न कुछ इस प्रकार स्वप्न भी याद रह
जाता है। एक पहाड़ी सड़क है ऊपर को जाती हुई। ~~उसके [illegible]~~
पर हम हैं। धर्मपत्नी कहती है कि उसने एक मकान देखना
है जिसमें shift करना है। वह उस मकान में चली
जाती है। बाहर सड़क के दोनों ओर [illegible] [illegible] हैं उनमें
कुछ फूल खिले हुए हैं। वह कहता है ये वही फूल हैं
Tulips जो [illegible] हैं Red white and yellow [illegible]
[illegible]. फिर हम भी चले जाते हैं। हम दूसरी सड़क पर
आ जाते हैं। Show case [illegible] में एक [illegible]
[illegible] हूं। [illegible] [illegible] सा बना है। [illegible] चला
[illegible] के लिए दो तीन लोग दिखाई देते हैं। एक [illegible]
young सरदार जी हैं। उनके सामने पड़ने पर Trespasses
करने की चेष्टा को कुछ न बोलने से मैं उनसे पूछता हूं
कोई मन पढ़ता सा [illegible] कि पासपोर्ट वाले लोग
यहां काम करते हैं, वे कहते हैं हां यहां काम करते हैं,
[illegible] यही कोई [illegible] [illegible] [illegible]।
कुछ [illegible] का नाम सुन कर कहता है आइये
चाय पानी पीजिये। हमें कुछ [illegible] तो घर
नहीं। [illegible] में [illegible] [illegible] पर [illegible] देते हैं।
दूसरी ओर चले जाते हैं। फिर हम कहते हैं कि पहाड़ी
उस सड़क के मोड़ से दूसरे [illegible] [illegible] के
क्यों नहीं चलाई। लगता है वह स्थान [illegible] की ओर
लाई है। इसके बाद नींद टूट जाती है।

स्वप्न तीनों ही अच्छे हैं। इसमें कोई सन्देह नहीं।
[illegible] [illegible] है। अच्छे दिनों की तरह
[illegible] सन्देह नहीं है। लगता है इसके आगे दिन कुछ
अच्छे आने वाले हैं - अच्छे दिन जिनकी आज प्रतीक्षा
[illegible] ही हम अपना वर्तमान समय काट रहे हैं।

दिन का मानस बीतता है। कोई विशेष अच्छी
बुरी घटना नहीं घटती। [illegible] National
Library जाता हूं, काम करता हूं, समय यह कट
जाता है। [illegible] में भी [illegible] [illegible]
स्कूल का [illegible] जाता हूं।

१०. ६. १९६८

रात्रि को दो स्वप्न आते हैं। एक तो बहुत ही लम्बा है।
बहुत कुछ उसका याद मुझे नहीं रहता। जितना याद
रहता है वह भी बहुत रोमांचक है। एक मन्दिर सा है। मैं वहां हूं।
मां काली की तरह मेरी भी जीभ बाहर निकली हुई है। पहले तो
पूरी बाहर नहीं निकली हुई। फिर पूरी बाहर निकलती है।
मानो मां [illegible] [illegible] [illegible] मुझे मानो [illegible]
प्रसाद मिलता है कुछ [illegible] [illegible] कुछ [illegible] [illegible]

भी (आकार का) उसमें मिश्री के छोटे छोटे टुकड़े हैं, जो मैं इकट्ठे कर लेता हूँ और खा लेता हूँ।

नींद खुलने के बाद शौच जाना हो जाता है।

दूसरा समुद्र देखने का है। एक मकान में नीचे की मंज़िल में मुझे G.M.N. College के भगतराम, दूजी आदि कुछ लोग दिखाई देते हैं खानादि की तैयारी में। वे ऐसे हैं, कि मुझे पहचानते भी नहीं हैं। फिर चण्डीगढ़ वाले देवीदत्त शर्मा के साथ मैं उस मकान के ऊपर की मंज़िल पर जाता हूँ। छत का सा दृश्य है कि platform जैसा। वहाँ से समुद्र की विशाल नीली जलराशि दीखती है। बहुत मनोरम लगती है। आगे कोई और कुछ दृश्य हैं। वे confused हैं। नानाजी का उनके एक दोहते समुद्र के जल में पड़े हैं। मैं नानी जी के बाल पकड़ कर खींचता हूँ कि वे डूब न जायें। आदि आदि।

दिन अच्छा बीतता है। यूनिवर्सिटी पहुँचने पर कुछ डिक्टेशन का काम मिलता। उसके बेबल पे श्लोकों की आरम्भ में गोविन्द स्वामी जी हैं। साथ में आलसदोष शोकसंगी तथा अपने घर के function के निमन्त्रण की। मिठाई भी बताना साथ मान दे गया है। उदयनारायण भी निश्चिन्त सा हो गया है। पाई मातृ लाइब्रेरी के कार्ड बनने की सूचना भी मिलती है। सभी कुछ बहुत अच्छा है।

१२.६.१९८८

एक ऊँचा सा मकान है। मुझे उससे नीचे उतरने की सीढ़ी नहीं मिलती। एक slope जैसी बनी है। सोचता हूँ अगर फिसलता हूँ तो चोट खराब होगी। बड़ा अजीब लगता है कैसे लोग इस पर आते जाते होंगे। एक आदमी सीधी चढ़ाई पर चढ़ता आता दीखता है पर मैं तो ऐसे नहीं चढ़ सकता। पिता जी के पास एक दरवाज़े की ताली है। दरवाज़ा खोलने पर सीढ़ियाँ दिखाई दे जाती हैं। अरे, इनसे तो बड़ा उतरा जा सकता है।

एक अन्य चलते से स्वप्न में Princess दिखाई देती है। वह shopping में मेरे साथ है। पर उसके साथ होने पर भी दुकानदार कीमत कम नहीं करता।

कुछ देर के बाद दीखता है नीचे कुछ लोग जमा हैं। उनमें वर आयी उसका पिता भी है। मैं वर आयी उसके पिता को सन्देश देने

१९.६.१९८८

एक मकान की ऊँची सी दीवार पर मैं बैठा हूँ। खाना खा रहा हूँ। ५-५.३० बजे अपराह्न का समय है। खाने में इतनी देर हो गई है। आनन्द कोई मेरे रूम में होता है। ऊपर से खाना आ जाता है। बहुत दिनों बाद वह मुझसे मिलने आया है। अच्छे mood में है। कुछ गम्भीर भी है उसमें, कुछ नम्रता भी। कहता है कि आपको पता है क्या हो गया है। राष्ट्रपति के बारे में कुछ कहता है। मैं कहता हूँ कि मुझे कुछ पता नहीं, मैं सभी विषयों में blissfully ignorant हूँ। आगे का स्वप्न कुछ धूमिल सा है।

स्वप्न संसार

7. 6. 1978

आज रात को एक बड़ा ही विचित्र स्वप्न देखा। मैंने अजीब से कपड़े पहिने हुए हैं। एक तौलिया सा सीधे की ओर और एक धोती [illegible] जिसे बांधना मुश्किल है। हाथ से ही पकड़े पकड़े आगे जा रहा हूं। मेरे साथ वाचस्पति मौद्गल्य हैं। एक स्थान पर हम पहुंचते हैं। वहां पूजा हो रही होती है। हम भी बैठ जाते हैं। पुजारी हमें पहचानता सा लगता है। वह मेरी presence से honoured feel करता है। उसके हाथ में बादामों का भरा थाल है। मुझे लगता है वह उसे मुझे दे रहा है। मैं हाथ बढ़ा कर उसे थामने को होता हूं पर वह उसे मुझ से हटा लेता है, बादाम प्रसादरूप हैं और अन्य लोगों को भी देने हैं। फिर वह मुझे शेष लोगों को अन्यान्य चीज़ों का थोड़ा थोड़ा प्रसाद देता है पर मुझे एक थाली कर देता है। लोगों को लगता है मैं कोई विशिष्ट व्यक्ति हूं। इतने में वह व्यक्ति जो पूजा करा रहा होता है ~~मुझे~~ मुझे मुस्कराते हुए खड़ा कर मेरे गले में सोने की माला डाल देता है। माला में तीन चार circular शृंखलाएं हैं जो लीक हां चाहे लंबाई में घटती जाती हैं। नीचे सोने के मनके लटक रहे हैं। इसके बाद पहले वाले incarnation जैसे में ही हम सामने के पहाड़ पर चढ़ने का प्रयास करते हैं। खड़ी चढ़ाई है। वाचस्पति कहते हैं कि एक ओर के पत्थरों पर पांव रखने की जगह है। उधर से चढ़ा जा सकता है। इसी वेला वह स्वप्न समाप्त हो जाता है। जागने पर मन प्रसन्न है। कोई आकर सोने का दान कर गया। ऐसा लगता है।

कोई विशेष
सा मालाओं
सी

दिन काफी अच्छा बीता। कलकत्ता के लिये Immigration Office से permission लेनी थी जो सामान्यतया तीसरे दिन मिलती है। 570 प्रार्थी साथ ही। वह आज के आज में ही मिल गई। वहां के लिये booking भी हो गई। अब कल foreign ministry से re-entry visa लेना है। उसके मिलने पर तथा I.C.C.R. से permission मिलने पर Calcutta यात्रा सम्भव हो सकेगी।

क्या आगामी के सुख दुःखादि के सूचक होते हैं जिसकी प्रतीति वे मुझे वर्षों से दे रहे हैं?

8. 6. 1978

आज रात को भी एक स्वप्न आया। ~~एक नाई~~ मेरी लम्बी लम्बी बालों की लटें हैं। एक नाई कैंची लेकर एक एक करके उन्हें काटता है। वह मुझे चाय भी पीने को देता है। चीनी की जो प्याली वह मुझे देता है उसमें कहीं कहीं कोई कोई चींटी भी दीख जाती है। मैं उन्हें एक एक कर पुरकी या चीनी के साथ ही फैंक देता हूं।

और कोई विशेष स्वप्न नहीं है।
हां जोशी की झलक भी दीख जाती है।
दिन अच्छा बीतता है।

10. 6. 1978

एक अजीब सा होता रहा स्वप्न। सामने टेबिल है। मैं अपने लिखने में लगा हूं। मेरे सामने मक्खन की टिकिया, डबल रोटी आदि खाने की चीज़ें रखी हैं। [illegible] आवश्यकता महसूस होती है। वह मक्खन उठा लेती हैं। मैं

उसे कहता हूं कि मक्खन चाहो तो लो, पर इससे पूर्व अनुमति लेनी चाहिये। मैं कहता हूं तुम्हारी शादी हो जायेगी और तुम्हारी नाक कट गई तो कैसा लगेगा। शिक्षक के नाते यह बतलाना भी मेरा कर्तव्य है। इस पर वह बहुत खिसिया सी जाती है। इस पर स्कूल छूट जाता है।

दिन अच्छा बीतता है। प्रातःकाल गुरुद्वारे में जाते हैं। गुरु अर्जुनदेव जी का शहीदी दिवस है। बहुत अच्छा खाने पीने को मिलता है। बाजार में भी जाते हैं। कुछ खरीद - फरोख्त भी होती है।